बालकृष्ण षोडशोपचार पूजन-विधि

नटखट माखनचोर की भावमयी सेवा-पद्धति

संदर्भ: “नित्य कर्म पूजा प्रकाश”, “धर्मसार”, और “आङ्गनेय सर्वस्वम्”

लेखक:

हनुमान दास

आशीर्वाद व मार्गदर्शन:

गुरु-भाई श्री आयुष शर्मा जी

षोडशोपचार पूजन क्रम

१. आवाहनम् —

श्रीगोविन्दाय नमः, आवाहयामि, स्थापयामि।

भाव — हे नन्दलाला! कृपा कर इस पूजन में पधारें और हमारे हृदय-आसन में विराजमान हों।

२. आसनम् —

श्रीगोविन्दाय नमः, आसनं समर्पयामि।

भाव — गोविन्द को आराम से बैठाने हेतु मुलायम आसन अर्पित करें।

३. पाद्यं —

श्रीगोविन्दाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

भाव — नन्हें चरण जल से धोकर प्रेमपूर्वक पखारें।

४. अर्घ्यम् —

श्रीगोविन्दाय नमः, अर्घ्यम् समर्पयामि।

भाव — चन्दन-मिश्रित जल से भगवान का अभिनन्दन करें।

प्राणायाम के समय मन में इस छवि का ध्यान करें—

यशोदा मैया की गोद में बैठे नन्हे लाला, सिर पर मोरपंख का मुकुट, गले में मोतियों की माला, मुख पर माखन-सी मुस्कान, नन्हे हाथों में माखन का लड्डू, और यशोदा मैया स्नेहभरी दृष्टि से लाला को निहार रही हैं।

४. संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प मंत्र बोलें —

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीगोविन्दप्रीत्यर्थं
षोडशोपचार पूजनं करिष्ये ॥

गोविन्द षोडशोपचार पूजन-विधि

१. स्थान-शुद्धि एवं आसन

पूजन-स्थान को स्वच्छ कर पीले वस्त्र अथवा कुशासन बिछाएँ। गोविन्द की प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें। पूजन-सामग्री तैयार रखें — जल, वस्त्र, चन्दन, पुष्प, तुलसी-दल, धूप, दीप, नैवेद्य (माखन, मिश्री, फल), पान-सुपारी, दक्षिणा

२. आचमन एवं शुद्धि मंत्र

स्वच्छ वस्त्र धारण कर निम्न मंत्र से आचमन करें —

केशवाय नमः ।

नारायणाय नमः ।

माधवाय नमः ।

इसके बाद शुद्धि मंत्र बोलें —

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

३. प्राणायाम

शान्त आसन में बैठकर, गहरी श्वास लेते और छोड़ते हुए मन में "श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण" का उच्चारण करें।

षोडशोपचार पूजन क्रम

५. आचमनम् —

श्री गोविन्दाय नमः, आचमनं समर्पयामि।

भाव — मीठा, शीतल जल अर्पित करें

६. स्नानम् —

श्रीगोविन्दाय नमः, स्नानं समर्पयामि।

भाव — गंगाजल अथवा शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

७. वस्त्राणि —

श्री गोविन्दाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

भाव — पीताम्बर या छोटी धोती पहनाएँ।

८. यज्ञोपवीतम् —

श्री गोविन्दाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

भाव — यज्ञोपवीत अर्पित करें।

षोडशोपचार पूजन क्रम

९. गन्धः —

श्री गोविन्दाय नमः, गन्धं विलेपयामि।

भाव — माथे पर चन्दन का तिलक लगाएँ।

१०. पुष्पाणि —

श्रीगोविन्दाय नमः, पुष्पं समर्पयामि।

भाव — तुलसी-दल और सुगन्धित पुष्प अर्पित करें

११. धूपम् —

श्री गोविन्दाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

भाव — सुगन्धित धूप अर्पित करें।

१२. दीपम् —

श्री गोविन्दाय नमः, दीपं दर्शयामि।

भाव — दीपक से प्रकाश अर्पित करें।

षोडशोपचार पूजन क्रम

१३. नैवेद्यम् —

श्री गोविन्दाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

भाव — माखन, मिश्री, खीर, लड्डू अर्पित करें।

१४. ताम्बूलम् —

श्री गोविन्दाय नमः, ताम्बूलं पुगीफलानि समर्पयामि।

भाव — पान और सुपारी अर्पित करें।

१५. दक्षिणा —

श्री गोविन्दाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

भाव — प्रतीकात्मक वस्त्र, खिलौने अथवा उपहार अर्पित करें।

१६. पुष्पाञ्जलिः —

श्री गोविन्दाय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

भाव — तुलसी-पुष्प लेकर श्रीकृष्ण से प्रार्थना —

"हे लल्ला! मेरे जीवन में ऐसे ही हँसते-खेलते रहो।"

ठाकुर जी के सामने इस स्तोत्र का पाठ करें

कृष्णाष्टकम जिसकी रचना स्वयं भगवान शंकराचार्य जी ने की
है इसके पाठ से ठाकुर से शीघ्र प्रसन्न होते हैं ।

भजे व्रजैक मण्डनम्, समस्त पाप खण्डनम्,
स्वभक्त चित्त रञ्जनम्, सदैव नन्द नन्दनम्,
सुपिन्छ गुच्छ मस्तकम् , सुनाद वेणु हस्तकम् ,
अनङ्ग रङ्ग सागरम्, नमामि कृष्ण नागरम् ॥ १ ॥

मनोज गर्व मोचनम् विशाल लोल लोचनम्,
विधूत गोप शोचनम् नमामि पद्म लोचनम्,
करारविन्द भूधरम् स्मितावलोक सुन्दरम्,
महेन्द्र मान दारणम्, नमामि कृष्ण वारणम् ॥ २ ॥

कदम्ब सून कुण्डलम् सुचारु गण्ड मण्डलम्,
व्रजान्गनैक वल्लभम नमामि कृष्ण दुर्लभम.
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
युतम सुखैक दायकम् नमामि गोप नायकम् ॥ ३ ॥

सदैव पाद पङ्कजम मदीय मानसे निजम्,
दधानमुत्तमालकम् , नमामि नन्द बालकम्,
समस्त दोष शोषणम्, समस्त लोक पोषणम्,
समस्त गोप मानसम्, नमामि नन्द लालसम् ॥ ४ ॥

भुवो भरावतारकम् भवाब्दि कर्ण धारकम्,
यशोमती किशोरकम्, नमामि चित्त चोरकम्.
दृगन्त कान्त भङ्गिनम् , सदा सदालसंगिनम्,
दिने दिने नवम् नवम् नमामि नन्द संभवम् ॥ ५ ॥

गुणाकरम् सुखाकरम् क्रुपाकरम् कृपापरम् ,
सुरद्विषन्निकन्दनम् , नमामि गोप नन्दनम्.
नवीनगोप नागरम नवीन केलि लम्पटम् ,
नमामि मेघ सुन्दरम् तथित प्रभालसथ्यतम् ॥ ६ ॥

समस्त गोप नन्दनम् , हृदम्बुजैक मोदनम्,
नमामि कुञ्ज मध्यगम्, प्रसन्न भानु शोभनम्.
निकामकामदायकम् दृगन्त चारु सायकम्,
रसालवेनु गायकम, नमामि कुञ्ज नायकम् ॥ ७ ॥

विदग्ध गोपिका मनो मनोज्ञा तल्पशायिनम्,
नमामि कुञ्ज कानने प्रवृद्ध वह्नि पायिनम्.
किशोरकान्ति रञ्जितम, द्रुगन्जनम् सुशोभितम,
गजेन्द्र मोक्ष कारिणम, नमामि श्रीविहारिणम ॥ ८ ॥

यथा तथा यथा तथा तदैव कृष्ण सत्कथा ,
मया सदैव गीयताम् तथा कृपा विधीयताम.
प्रमानिकाश्टकद्वयम् जपत्यधीत्य यः पुमान ,
भवेत् स नन्द नन्दने भवे भवे सुभक्तिमान ॥ ९ ॥

|| श्रीहरि ||

B. G. Sharma